अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

संबंधित साहित्य से अनुसंधान की समस्या से संबंधित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञानकोषों, पत्र–पत्रिकाओं एवं शोध प्रबंधों के द्वारा शोधकर्ता को अपनी समस्या के चयन परिकल्पनाओं के निर्माण आदि को करने में सहायता मिलती है। इसके द्वारा विभिन्न सिद्धांतो एवं उसमें निहित धारणाओं को समझने में सहायता मिलती हैं शोध के क्षेत्र में कितना और किस प्रकार का कार्य हुआ है? इसकी भी जानकारी प्राप्त होती है। चयनित किये गये शोध के लिए किस प्रकार के उपकरण का प्रयोग उचित होगा? एवं उसमें किस प्रकार की सांख्यिकी का प्रयोग किया जायेगा? इसकी जानकारी संबंधित साहित्य के द्वारा ही प्राप्त होती है। इसके साथ ही संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण परिकल्पना निर्माण के लिए आधार प्रदान करता है। शोधार्थी ने जिन संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण किया उसका विवरण इस प्रकार हैं।

गोरे (1968)– ने अपने अध्ययन से निष्कर्ष निकाला कि आधे से अधिक प्राथमिक शिक्षक, लगभग आधे माध्यमिक व महाविद्यालयी शिक्षक व शिक्षार्थी और लगभग 25 से 30 प्रतिशत अभिभावक धर्मनिरपेक्षता को स्वीकार नहीं करते हैं।

जवेरी (1969)– ने **"धार्मिक मूल्यों का अध्ययन"** किया। अध्यन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि शिक्षकों में धर्मनिरपेक्षता की अपेक्षा धर्म का प्रभाव अधिक हैं।

नोमानी (1970)– धर्मनिरपेक्षता के लिए सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन किया और यह निष्कर्ष निकाला कि सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तके धर्मनिरपेक्षता को प्रोत्साहित करने में असफल रही है।

दत्ता (1960–70)– ने मुस्लिम समुदाय की शिक्षा की समस्या को लेकर दक्षिण भारत के कुछ नगरो का सर्वेक्षण किया। सर्वेक्षण में पाया कि हिन्दू व मुस्लिम छात्रों के मध्य शैक्षिक सुविधाओं में एक बहुत बड़ा अंतर हैं। शिक्षा के उच्च स्तर पर पहुँचने वाले हिन्दू छात्रों संख्या की तुलना में मुस्लिम छात्रों की संख्या बहुत कम रह जाती हैं, अध्ययन द्वारा यह भी सिद्ध करने का प्रयास किया कि वर्ष 1960–70 के मध्य विद्यालय जाने वाले मुस्लिम छात्रों की संख्या में 10–20 प्रतिशत की कमी आई।

अहमद (1985)– ने मुस्लिम अल्पसंख्यक के ऊपर अध्ययन किया अध्ययन का विषय था– **"मुस्लिम अल्पसंख्यकों में शिक्षा का स्तर तथा धर्मनिरपेक्ष भारत के राष्ट्रीय एकीकरण में मुस्लिम अल्पसंख्यक की भूमिका"** इस अध्ययन से निम्न परिणाम सामने आये मुस्लिम अल्पसंख्यक को जो शैक्षिक सुविधायें प्राप्त हैं वे पर्याप्त नहीं है। मुस्लिम अल्पसंख्यकों के सांस्कृतिक सिद्धांत एवं शिक्षा के संबंध में स्वंय की धारणा एवं मजबूत राष्ट्र के निर्माण में बाधक हो सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा कार्यक्रम की सफलता मुस्लिम अल्पसंख्यक को शामिल किये बिना संभव नहीं है। विभिन्न संस्कृति वाले भारत देश में एक समान शिक्षा पद्धति संस्कृति की सुरक्षा के लिए घातक सिद्ध हो सकती है। मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदायों में अन्य बातों के अलावा धर्म के प्रति लगाव अधिक है।

कुमार (1986)– ने अपने शोध **"ईसाई विद्यालय के विद्यार्थियों में धार्मिक समरूपता और पूर्वाग्रह के विकास का अध्ययन"** किया

और अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि 16–17 वर्ष की आयु पर ईसाई विद्यार्थियों में जाति संबंधी और पूर्वाग्रह के प्रति स्थायी भाव देखने को मिला था। वे हिन्दू, सिक्ख और इस्लाम आदि अन्य धर्मो को भी स्वीकार करते थे।

दुबे (1989)– ने **"सामाजिक समस्या समाधान योग्यता एवं धर्मनिरपेक्ष मानसिकता के विकास हेतु न्यायिक पृच्छा शिक्षण प्रतिमान प्रभावोत्पादकता ज्ञात करने हेतु एक अध्ययन"** किया। इस अध्ययन से इन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि न्यायिक पृच्छा शिक्षण प्रतिमान के परिणाम स्वरूप धर्मनिरपेक्ष मानसिकता विकसित होती है।

जोशी (1998)– ने **"माध्यमिक स्तर पर नागरिक शास्त्र में मूल्य प्रथक्करण पुर्नयुक्ति द्वारा लोकशाही मूल्यों का विकास का अध्ययन"** कर निष्कर्ष प्राप्त किया कि नागरिक शास्त्र के अध्यापन से विद्यार्थियों के जनतंत्रतात्मक मूल्यों के विकास में मूल्य प्रथक्करण पुर्नयुक्ति को असरकारक माना गया हैं।

शर्मा (1992)– ने **"शिक्षकों का सामाजिक, आर्थिक स्तर एवं मूल्यों के राष्ट्रीय अभिवृत्ति का अध्ययन"** कर यह पाया कि विभिन स्तर की शिक्षकों में सामाजिक आर्थिक स्तर अलग–अलग पाया गया परन्तु उनकी Value Orientation. एवं राष्ट्रीय अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं पाया गया। कुछ हद तक Value Orientation. राष्ट्रीय अभिवृत्ति एंव सामाजिक स्तर भी आपसी संबंध रखते हैं।

साहू (1995)– ने अपने अध्ययन– **"देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर के विश्वविद्यालयी छात्रों में उनमें विद्यमान धर्मनिरपेक्ष मूल्यों के बोध का अध्ययन"** किया। अध्ययन में पाया कि विश्वविद्यालयी विद्यार्थियों में उदासीन धर्मनिरपेक्ष मूल्यों को अनुभव करने वाले विद्यार्थियों की संख्या औसत पाई गई। धार्मिक सूचनायें, आयु और सम्प्रदाओं द्वारा सार्थक रूप से प्रभावित पाई गई परन्तु लिंग का

उन पर कोई प्रभाव नहीं था धार्मिक सूचनाओं का स्तर ईसाई धर्म से संबंधित बिन्दुओं के लिए वस्तुतः नीचे था। अन्य धर्म संबंधी बिन्दुओं के लिए काफी नीचे था।

अवस्थी (1992)– ने **"भोपाल नगर के संदर्भ में शैक्षिक अपसरों की समानता एवं अल्पसंख्यक मुस्लिम छात्रों द्वारा उनका उपयोग एक विश्लेष्णात्मक अध्ययन"** किया। अध्ययन से निष्कर्ष निकला कि मुस्लिम छात्रों को विद्यालयों में समुचित सुविधाऐं उपलब्ध नहीं हैं तथा अभिभावक भी शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रोत्साहित नहीं करते हैं। मुस्लिम छात्रों की शिक्षा में मूलतः दो तत्व बांधा उत्पन्न करते हैं। विद्यालय का वातारण और परिवार का वातारण।

काले (2000)– ने **"प्रारंभिक विद्यालयों के शिक्षकों में जनतंत्रतात्मक मूल्यों का अध्ययन"** किया और निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये स्वतंत्रता, समानता, बौद्धिक, राष्ट्रीय, एकात्मक श्रम सम्मान एवं स्वास्थ्य मूल्यों का स्त्री व पुरुष, डी.एड. व बी.एड. शिक्षकों, शहरी व ग्रामीण शिक्षकों, सयुक्त व एकल परिवार के शिक्षकों में जनतंत्रतात्मक मूल्यों का सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

परवीन (2003)–ने **"मुस्लिम बालक एवं बालिकाओं में शैक्षणिक पिछड़ापन का अध्ययन"** किया। अध्ययन के दौरान यह पाया कि मुस्लिम समुदाय के बालक एवं बालिकाओं का शैक्षणिक पिछड़ान उनको समुचित सुविधायें न मिलने के कारण हैं।

मालीवाड (2004–05)– ने **"प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन"** किया और निष्कर्ष प्राप्त किया कि लिंग, क्षेत्र, आयु, विद्यालय के प्रकार, अनुभव आदि के आधार पर सैद्धांतिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों का शिक्षकों में प्रभाव देखने को नहीं मिला।

रायक्वार (2008)– ने अपने अध्ययन **"धर्मनिरपेक्षता के प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति का अध्ययन"** से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किये अध्यापको के प्रति अभिवृत्ति औसत धर्मनिरपेक्ष पाई गई। महिला एवं पुरूष अध्यापकों की अभिवृत्ति समान धर्मनिरपेक्ष पाई गई।

हिन्दू अध्यापकों व मुस्लिम अध्यापकों की अभिवृत्ति समान धर्मनिरपेक्ष पाई गई। शहरी व ग्रामीण अध्यापकों की अभिवृत्ति समान धर्मनिरपेक्ष पाई गई। विभिन्न जाति के अध्यापकों की अभिवृत्ति समान धर्मनिरपेक्ष पाई गई।